दैनिक भास्कर
नवादा / शेखपुरा भास्कर
28-10-2026

कार्यशाला संरक्षण और प्रसंस्करण के सिखाए गुर कशमारा में कार्यशाला आयोजित

स्थानीय फलों से बढ़ेगी किसानों की आमदनी

सिटी रिपोर्टर | रोह

स्थानीय फल किस्मों के संरक्षण और उनके प्रसंस्करण से किसानों की आमदनी बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है। इसी उद्देश्य से मंगलवार को रोह प्रखंड के कशमारा गांव में एक दिवसीय कार्यशाला-सह-प्रशिक् षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें किसानों को पारंपरिक फल किस्मों के संरक्षण, पंजीकरण, कीट-व्याधि प्रबंधन और फल उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर बाजार में बेहतर कीमत हासिल करने के तरीके बताए गए। कार्यक्रम का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा (लखनऊ), बिहार राज्य जैव विविधता परिषद, पटना और कृषि विज्ञान केंद्र, नवादा के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। संस्थान के फसल सुधार एवं



प्रशिक्षण में उपस्थित किसान

जैव-प्रौद्योगिकी विभाग के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने आम, अमरूद, नींबू, करौंदा, बेल, आंवला और कटहल जैसी पारंपरिक फल किस्मों के संरक्षण एवं पंजीकरण की प्रक्रिया समझाई। उन्होंने कहा कि स्थानीय किस्मों का वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण जैव विविधता को बचाने के साथ किसानों के अधिकारों के संरक्षण के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने विरासत वृक्षों के महत्व और उनके संरक्षण की जरूरत पर भी प्रकाश डाला। प्रखंड उद्यान अधिकारी विकास कुमार ने स्थानीय फल किस्मों की उपयोगिता के साथ आम और लीची में कीट-व्याधि प्रबंधन की तकनीकों की जानकारी दी। कृषि विज्ञान केंद्र, नवादा के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. शशांक शेखर सिंह और पशु विज्ञान विशेषज्ञ रजत रंजन ने भी किसानों को उपयोगी सुझाव दिए। विशेषज्ञों ने बताया कि फल उत्पादन के साथ प्रसंस्करण और उत्पादों की बेहतर पैकेजिंग एवं विपणन पर ध्यान देकर किसान अतिरिक्त आय के अवसर तलाश सकते हैं।

लीची से कटहल तक, किसानों ने बताईं समस्याएं : कार्यशाला में विभिन्न प्रखंडों के करीब 45 से 50 किसानों ने हिस्सा लिया। किसानों ने लीची में कम फलन, बीजू आम में एकांतर फलन, बेल में फल गिरने, आंवले में फल नहीं लगने और कटहल के फल गिरने जैसी समस्याएं विशेषज्ञों के सामने रखीं। विशेषज्ञों ने इन समस्याओं के संभावित कारणों और वैज्ञानिक प्रबंधन के उपायों के बारे में मार्गदर्शन दिया।